Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 8, Aug - 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.871
Received on : 31/07/2021 Accepted on : 14/08/2021 Publication Date: 15/08/2021

आस्था और विश्वास के कवि गिरिजा कुमार माथुर

डॉ. आर.के. पाण्डेय **चोवाराम यदु**
शोध-निर्देशक, विभागाध्यक्ष (हिंदी) शोधार्थी
संत गुरु घासीदास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुरूद, जिला-धमतरी (छ.ग.)
Email - chowaram306@gmail.com

आस्था और विश्वास के भाव ही साहित्यकार को महत्वपूर्ण स्थान पर पदस्थ करते हैं। साहित्यकार आस्था, विश्वास के बगैर एक अच्छे साहित्य का निर्माण नहीं कर सकता। आस्था, विश्वास ही वह शक्ति है जो साहित्यकार को सृजन में शक्ति देता है। कवि गिरिजा कुमार माथुर अनास्था, निराशा एवं अविश्वास के कवि नहीं हैं। वे आस्था, विश्वास व संघर्ष के कवि हैं। यह आस्था, विश्वास की प्रवृत्ति कवि गिरिजा कुमार माथुर की कविताओं में समाया हुआ है। आस्था, विश्वास के संबंध में गंगा प्रसाद पाण्डेय के विचार प्रस्तुत हैं- ''माता जिस प्रकार आस्था के बिना अपने रक्त से सन्तान का सृजन नहीं कर सकती, धरती जिस प्रकार ऋतु के बिना अंकुर को विकास नहीं दे सकती, साहित्यकार भी उसी प्रकार गंभीर विश्वास के बिना अपने जीवन को अपने सृजन में अवतार नहीं दे पाता।''[1]

प्रारंभ में साहित्यकार की आस्था सीमित होती है, जैसे-जैसे बुद्धि और हृदय में समाज, ग्राम, नगर, देश आदि से आगे बढ़कर विश्व की सत्ता को स्वीकार कर लेते हैं, तो उनका दायरा व्यापक हो जाता है। ठीक ऐसा ही स्वरूप कवि माथुर के काव्य में आया है। प्रारंभ में निजी अनुभूति में उनका वैयक्तिक प्रेम समाया हुआ है, फिर उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ ग्राम्य, नगर, देश एवं विदेशों के समस्या को लेकर काव्य रचे हैं। गंगा प्रसाद पाण्डेय का कथन उचित प्रतीत होता है- ''जब मनुष्य के हृदय और बुद्धि की परिधि परिवार ही था, तब उसी के प्रसाधन संरक्षण तक उसकी आस्था सीमित थी। जैसे-जैसे उसके बुद्धि और हृदय ने समाज, ग्राम, नगर, देश आदि के क्रम पार कर विश्व की सत्ता को स्वीकार किया, उससे रागात्मक सम्बन्ध जोड़े, वैसे-वैसे ही उसकी आस्था नये क्षितिज को अपनाती गयी।''[2]

साहित्यकार की आस्था में दो तत्वों की अहं भूमिका होती है- प्रथम यह है कि समसामयिक तत्व कितना है, द्वितीय यह कि शाश्वत कितना है। आस्था जीवन-क्रम से निर्मित होती है, अतः उसे जड़ मान लेना उचित नहीं होगा। साहित्यकार आस्था की धरती से प्रचुर मात्रा में रस लेता है और इसे काव्य में परिणित भी कर देता है। साहित्य जीवन का अलंकार नहीं है, अपितु वह स्वयं जीवन है।

बहुआयामी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार गिरिजा कुमार माथुर आधुनिक भाव-बोध के कवि हैं। उनका काव्य संसार अत्यंत व्यापक है, वे ऐसे कवि हैं जो एक स्थान पर स्थिर नहीं रहे। उन्होंने छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता में लेखन का कार्य कर हिंदी काव्य के पाट को चौड़ा किया है। वे प्रारंभ में मधुर गीतकार के रूप में चीन्हें जाते हैं। माथुर जी आस्था, विश्वास व संघर्ष के कवि हैं। उनकी यही प्रवृत्ति उन्हें अन्य कवियों से अलग करती है। उनकी रचनाएँ मानव को कर्मरत रहने का संदेश देते हैं। कवि वर्तमान दुःखों व क्लेशों को देखकर घबराता नहीं है, वह संघर्षरत होकर व्यवस्था को परिवर्तन कर नवनिर्माण करने की प्रेरणा देता है। कवि ने यह स्पष्टतः स्वीकार किया है कि विरोधी तत्वों से जब संघर्ष करने की शक्ति नहीं होती है, तभी अनास्था का जन्म होता है। 'मंजीर' उनका प्रथम काव्य-संग्रह है। इस संग्रह में किशोर हृदय के भावों की सफल अभिव्यक्ति हुई है। माथुर जी को बाल्यावस्था में माँ का प्यार नहीं मिला, वे मातृ-सुख से वंचित रहे। इतना ही नहीं किशोरावस्था में प्रेम में सफलता नहीं मिली, जिसका पछतावा उन्हें जीवन भर रहा। इस प्रकार कवि को माँ एवं प्रेयसी का प्यार नहीं मिला। यही सब भाव उनकी कविताओं में भरा पड़ा है। उनकी कविताओं में अनुभव की प्रमाणिकता साफ झलकती है।

माथुर जी प्रेम और सौंदर्य के चित्रण में अपने समकालीनों से अलग हटकर अपनी पहचान बनाई है। उन्हें किसी का पिछलग्गु होना कतई स्वीकार नहीं है। वे सभी चीजों में नवीनता को स्वीकारते हैं। इसका कतई यह भाव नहीं होना चाहिए कि वे पुरानी परंपराओं को नहीं मानते थे। वे पुरानी रीति-रिवाज को मानते थे, किंतु रुढ़ियों को कतई स्वीकार नहीं करते थे। इस कथन के परिप्रेक्ष्य में रमानाथ अवस्थी जो उनके समकालीन थे, उनके विचार उल्लेखनीय है- ''वह पुरानी परम्पराओं को या पुराने रीति-रिवाजों को मानते तो थे, किंतु रुढ़ियों को कतई नहीं मानते थे। विचारों में वे प्रगतिशील थे। उन्हें बार-बार पढ़ने को गुनने को मन करता है। उन्हें जितनी बार पढ़े उतनी बार फिर-फिर वे हमारे अपने हो जाते हैं, क्योंकि वे अपनी कविताओं में हमारी आशा और उपलब्धि की बात करते हैं, जो न मिला भूल उसे/कर तू भविष्य वरण/छाया मत छूना मन/होगा दुख दूना मन।''[3]

'हम होंगे कामयाब एक दिन' कवि माथुर जी की महत्वपूर्ण गीत है। इस गीत में पूर्ण आस्था और विश्वास दिखाई देता है। कवि का यह मानना है कि जो संघर्षों से डरकर भाग जाता है, उसे सफलता कदापि नहीं मिलती। अतः हमें भागना नहीं चाहिए,

अपितु कठिनाइयों का डटकर सामना करना चाहिए। यही भाव कवि की कविताओं में समाया हुआ है। कवि अपने जीवन में संघर्षों से लड़ता हुआ सतत कर्मशील बना रहता है और कामयाब भी होता है। शेरजंग गर्ग ने कहा है- ''माथुर जी कभी कामयाबियों से अछूते नहीं रहे। उन्होंने जिस क्षेत्र में कदम रखा सफलता प्राप्त की। कविता में भी चाहे गीत हो, नवगीत अथवा नई कविता और चाहे कवि सम्मेलनों का मंच, माथुर जी ने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। यही स्थिति आकाशवाणी और दूरदर्शन के कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी भी रही।''[4]

कवि को पूरा विश्वास है कि आज नहीं तो कल हमें सफलता जरुर मिलेगी। यही भाव उन्हें कर्मरत बनाए रखता है- ''होंगे कामयाब/हम होंगे कामयाब। हम होंगे कामयाब एक दिन/मन में है विश्वास/पूरा है विश्वास/हम होंगे कामयाब एक दिन।'' माथुर जी की सबसे बड़ी खासियत यह भी रही है कि वे आत्मसजग सदैव रहा करते थे। इसी सजगता के कारण वे अपनी श्रेष्ठ रचना को भी श्रेष्ठतम रूप में सुनाने में विश्वास रखते थे। उनकी कामयाबियों के पीछे आस्था और विश्वास के गुण लिए हुए हैं। शेरजंग गर्ग के शब्दों में- ''माथुर जी आत्मसजग सदैव रहा करते थे भले ही काव्य-पाठ का अवसर हो अथवा किसी पार्टी या समारोह में जाने का। काव्य-पाठ के दौरान वह अपनी श्रेष्ठ रचा को श्रेष्ठतम रूप में सुनाने में विश्वास रखते थे और पार्टी समारोहों में आकर्षक पोशाक में उपस्थित होने में।''[5]

कवि माथुर का जीवन विविधताओं का चलचित्र है। उनका व्यक्तित्व का निर्माण विविध स्थान, विविध परिस्थितियों तथा विविध विचारधाराओं के प्रभाव से हुआ है। कवि के हृदय में स्नेह भी है और व्रिद्रोह भी। उन्होंने दीन-दुखी, अभावग्रस्त, उत्पीड़ित मानवता के प्रति असीम करुणा दिखाई है, वहीं दूसरी ओर शोषण और अन्याय करने वालों के प्रति विरोध के भाव भी व्यक्त हुए हैं। माथुर जी के विषय में डॉ. नगेन्द्र ने कहा है कि वे फूल जैसा कोमल और वज्र जैसा कठोर भी हैं अर्थात् परिस्थिति के अनुकूल उनके विचार बदलते रहते हैं। नगेन्द्र के कथन दृष्टव्य हैं- ''कवि माथुर के हृदय में एक ओर स्नेह की तरलता है, दूसरी ओर विद्रोह की आग, एक ओर त्रस्त और उत्पीड़ित मानवता के प्रति असीम करुणा है, दूसरी ओर अन्याय और शोषण के प्रति आक्रोश तथा एक ओर वर्तमान के प्रति खीझ है दूसरी ओर भविष्य के प्रति आस्था और विश्वास। उनका व्यक्तित्व कुछ ऐसे विरोधी तत्वों से निर्मित है, जिसमें कुसुम-सी कोमलता और वज्र-सी कठोरता का योग है।''[6]

'मैं वक्त के हूँ सामने' काव्य-संग्रह की कविता जलते प्रश्न में कवि माथुर जी को पूर्ण आस्था और विश्वास है, उनका यह मानना है कि अब समय आ गया है कि आम जनता की रक्षा हो तथा दुष्ट लोगों का विनाश हो- ''माना बदला है काफी कुछ/तेज नहीं लेकिन रफ्तार/रक्षित जन हो, दुष्ट दमन हो/समय-शक्ति फिर रही पुकार।''

कवि समय की महत्ता को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि समय का रथ ज़्यादा समय तक रुक नहीं पाता, जिस प्रकार रखा-रखा अमृत भी ज़हर बन जाता है। इतना ही नहीं चूका हुआ क्षण भी कभी वापिस नहीं आता है- ''समय का रथ ज्यादा रुक नहीं पाता है/रखा-रखा अमृत भी विष बन जाता है/चूका हुआ क्षण कभी वापिस नहीं आता है/उन पर क्या विश्वास, जिन्हें है अपने पर विश्वास नहीं/वे क्या दिशा दिखायेंगे दिखता जिनको आकाश नहीं।''

कवि माथुर प्रेम और सौंदर्य के अनूठे कवि हैं। उन्होंने अपनी प्रेयसी के साथ बिताए रंगीन पलों का सजीव चित्रण किया है। श्रृंगारिकता का साकेंतिक वर्णन ही उन्हें अधिक प्रिय रहा है। कवि के काव्य में बच्चन आदि की भाँति हाला के प्याला में अपने गम को भूलाने का प्रयास नहीं किया है। माथुर जी वर्तमान पर ही नहीं आगत भविष्य पर भी पूर्ण आस्था रखते हैं। मधु माहेश्वरी के कथन विचारणीय हैं- ''उनके काव्य में बच्चन आदि की भाँति निराशा, नियति व क्षणभंगुरता का प्राधान्य नहीं है। जीवन से पलायन की प्रवृत्ति उसमें नहीं है। वस्तुतः माथुर जी आस्था और विश्वास के कवि हैं। उन्होंने हाला के प्याले में अपने गम को भूलाने का प्रयास नहीं किया। वे वर्तमान क्षण पर नहीं आगत भविष्य पर भी पूर्ण आस्था रखते हैं।''[7]

कवि का प्रेम मूर्त और मांसल है, उनकी प्रेयसी कल्पनागम्य न होकर इसी संसार की है। कवि को अपनी प्रेयसी से प्रेम में जो धोखा मिला, वही उनके काव्य के विषय बन गए। इसका आशय यह कदापि नहीं कि उनकी कविताओं में दुःख, पीड़ा, विषाद ही दिखाई देती है, उनके काव्य में 'प्यार' निजी संघर्ष से मुक्ति पाने का सबसे बड़ा उपाय है। कवि को अपनी प्रेयसी (पत्नी) के प्रेम पर पूरा भरोसा है तभी तो प्रेम की महत्ता स्वीकारते हुए कहते हैं- ''सांस लेने मैं रूकूँ तुम प्यार दो/मन, नयन, तन, अधर की रसधार दो/शक्ति दो मुझको, सलोनी प्यार से/लड़ सकूँ मैं जुल्म के संसार से/और भी ऊँची चढ़ाई सामने/और भी भारी लड़ाई सामने/यह भयानक खोखली मीनार है/शक्ति देता सिर्फ तेरा प्यार है।''

कवि माथुर जी के प्रेम में वियोग एवं दुःख तो अनिवार्य अंग बन गए हैं, इस प्रेम रूपी यज्ञ में वह आहुति बन जाता है। कवि यहाँ निराश न होकर पूर्ण आस्था एवं विश्वास से भरा है- ''वे रोगी होंगे प्रेम जिन्हें अनुभव रस का कटु प्याला है/वे मुर्दे होंगे प्रेम जिन्हें सम्मोहनकारी हाला है/मैंने विदग्ध हो जान लिया, अन्तिम रहस्य पहचान लिया/मैंने आहुति बनकर देखा यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है।''

माथुर जी ने नारी को शक्ति के प्रेरणा-स्रोत के रूप में चित्रित किया है, पर इतना ही नहीं नारी को संघर्ष के लिए प्रेरित करने वाली महाशक्ति भी कहा है। इस परिप्रेक्ष्य में मधु माहेश्वरी के विचार सत्य प्रतीत होते हैं- ''माथुर जी नारी को शक्ति का

आधार माना है, वह प्रणयिनी को न केवल देह के रस गोपन भाव की संगिनी समझते हैं, पर उसे संघर्ष के लिए प्रेरित करने वाली महाशक्ति संबोधित करते हैं।''[8]

कवि को इस बात पर पूर्ण विश्वास है कि प्रिय का आगमन से जीवन में खुशी व उल्लास आता है। इतना ही नहीं उसके आने से तन व मन प्रेम से भर जाता है। 'भीतरी नदी की यात्रा' काव्य-संग्रह की ये पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं- ''तुम्हारे आते ही/मेरे कमरे का रंग गोरा हो जाता है/हर आईने का चेहरा/प्यारा हो जाता है।''

कवि को पूर्ण आस्था व विश्वास है कि प्रेम ही वह शक्ति है, जो विषम परिस्थिति में भी जीने की राह दिखाता है। इस संबंध में मधु माहेश्वरी के विचार उचित प्रतीत होते हैं- ''जीवन का मूलाधार प्रेम है, इसका अहसास मनुष्य को उम्र के प्रत्येक चढ़ाव के साथ महसूस होता है। जीवन में अन्य सभी प्रकार के संबंध झूठे पड़ सकते हैं, लेकिन प्रेम शाश्वत है।''[9]

कवि माथुर की कविताओं में संघर्ष और तनाव की अभिव्यक्ति व्यक्तिगत, मानसिक, दैहिक एवं यथार्थ रूप में हुआ है। इस संघर्ष और तनाव से कवि विचलित नहीं हुए और जुझारूपन का परिचय देते हुए भविष्य की उज्ज्वल कामना लिए आगे बढ़े। 'मशीन का पुर्जा' कविता में जहाँ समाज की विपन्नता का चित्रण है, वहीं दूसरी ओर 'अँधेरी दुनिया' कविता में विफलताएँ और अवसरहीनता का चित्रण हुआ है। इससे कवि परास्त नहीं होता, अपितु इन समस्त तनावों के बावजूद भी ये कविताएँ अदम्य आस्था से दीप्त हैं। इन तनावों में कवि की कविताएँ टूटती हुई नहीं, अपितु चेतना की गहरी पहचान और जुझारूपन को प्रकट करती है।

कवि माथुर जी की कविताओं में जिजीविषा का स्वर प्रमुख रूप से उभरा है, वह जिजीविषा पलायन न कर परिस्थितियों में संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार निराशा में आशा का संचार करती है। कवि परिस्थिति से दूर नहीं भागते, अपितु उससे संघर्ष करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। 'नाश और निर्माण' काव्य-संग्रह की कविता 'रूठ गये वरदान सभी' में जिजीविषा भावों की सफल अभिव्यक्ति हुई है- ''रूठ गये वरदान सभी फिर भी मैं मीठे गान लिये हूँ, टूट गया मंदिर तो क्या पूजा के अरमान लिये हूँ। पूनो निकल गई सूनी, तारे हैं अभी और मिटने को, एक बार खोकर भी मैं फिर से खोने को प्राण लिये हूँ।''

गिरिजा कुमार माथुर की कविताओं में वैयक्तिक प्रेम ही नहीं राष्ट्र-प्रेम की सफल अभिव्यक्ति भी दिखाई देती है। उनकी कविताओं में राष्ट्र के प्रति सतत जागरुक दृष्टि दृष्टिगोचर होती है। राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति कहीं भारतभूमि के यशोगान के रूप में हुई है और कहीं युवा जागृति मंत्र उच्चारित करने में हुई है। स्वतंत्रता के बाद नई जिंदगी आएगी ऐसा कवि को पूर्ण विश्वास है। 'पन्द्रह अगस्त 1947' कविता की ये पंक्तियाँ देखिए- ''आज जीत की रात पहरूए/सावधान रहना/खुले देश के द्वार/अचल दीपक समान रहना/ऊँची हुई मशाल हमारी/आगे कठिन डगर है/शत्रु हट गया, लेकिन उसकी/ छायाओं का डर है/शोषण से मृत हैं समाज/कमजोर हमारा घर है/किन्तु आ रही नई जिंदगी/यह विश्वास अमर है।'' दुर्गाशंकर मिश्र के शब्दों में- ''वस्तुतः कवि माथुर की कविताओं में हमें बहुधा नूतन भावबोध के ही दर्शन होते हैं और समान विषयों में लिखी गयी उनकी कविताओं में भी हमें नवीनता ही दीख पड़ती है।... कवि को देश की स्वतंत्रता की प्रसन्नता से अधिक चिंता नव-निर्माण की है।''[10]

देशानुराग और राष्ट्रीय प्रेम तथा समर्पण को व्यक्त करने वाली प्रमुख कविताएँ जिनमें 'एशिया का जागरण', 'जन्मभूमि', 'ढाकबनी', 'बुद्ध', 'इन्दुमती', 'दो चित्र', 'विजयादशमी', 'नए साल की सांझ', 'महाप्राण निराला', 'याज्ञवल्क्य' और 'गार्गी' आदि हैं। 'ढाकवनी' कविता में जनजीवन का यह रूप स्वस्थ सामाजिक जीवन की कामना के रूप में चित्रित हुआ है- ''लाल मिट्टी, लाल पत्थर, लाल कंकड़, लाल बजरी/फिर खिलेंगे ढाक के वन, फिर उठेगी फाग कजरी।''

कवि माथुर जी के राष्ट्रीयता और देशानुराग के विषय में अजय अनुरागी की मान्यता है- ''वस्तुतः राष्ट्रीयता की भावना नयी कविता की एक प्रवृत्ति रही है। नये कवियों ने राष्ट्र प्रेम पर समसामयिक रचनाएँ लिखी हैं। गिरिजा कुमार माथुर भी इस प्रवृत्ति को अपने काव्य में स्थान देते हैं।''[11]

कवि गिरिजा कुमार माथुर आर्थिक परिवेश के प्रति अत्यधिक सजग दिखाई देते हैं। वे यह स्वीकार करते हैं कि आधुनिक काल में आर्थिक कारकों की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। आज व्यक्ति धन को ही सब कुछ मानता है धन के अभाव में व्यक्ति के जीवन में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। वहीं आर्थिक विषमता व्यक्ति को निराश कर देता है। कवि माथुर ने आर्थिक विषमता पर अनेक कविताएँ लिखी हैं। उनका मानना है कि आर्थिक विषमता के कारण व्यक्ति का जीवन विषमय होता जा रहा है। विश्वम्भर मानव ने कवि माथुर के विषय में कहा है- ''मध्यवर्ग की आशा, आकांक्षाओं, विफलता, निराशाओं, स्वप्न और असंतोष का जैसा यथातथ्य वर्णन गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में मिलता है, वैसा अन्यत्र पाना दुर्लभ है।''[12] कवि का मानना है कि एक-न-एक दिन व्यवस्था में सुधार आएगा, आज जो दुखी जन हैं कल उन्हें सुख भी मिलेगा अर्थात् बुरे दिन समाप्त होकर अच्छे दिन आएँगे। यही आस्था व विश्वास नई जीवन जीने की राह दिखाता है। कवि गिरिजा कुमार माथुर प्रेम और सौंदर्य के कवि हैं, उनकी कविताओं में मिलन के चित्र के साथ वियोग के पलों का भी वर्णन हुआ है। इन वियोग के क्षणों में कवि विचलित न होकर कर्मशील बना रहता है। यहाँ भी कवि के आस्था, विश्वास ही परिलक्षित होते हैं।

गिरिजा कुमार माथुर समाज में आर्थिक समता बनाना चाहते हैं। उन्होंने आर्थिक समानता लाने के लिए समाज को सुखी, संपन्न व वैभवशाली बनाने के लिए क्रांति व विध्वंस को महत्व न देकर निर्माण पक्ष को अधिक महत्व दिया है। उनका यह विश्वास है कि शोषण, गरीबी व भुखमरी का नाश नारेबाजी एवं रक्तक्रांति से नहीं, अपितु देश के नवनिर्माण से ही हो सकता है, यह नवनिर्माण मानव के कठोर परिश्रम से ही संभव है। मनुष्य अपने कठोर परिश्रम एवं दृढ़ इच्छाशक्ति से धरती को फिर से हरा-भरा बना सकता है। इस प्रकार कवि को आशा और विश्वास है। कवि नवयुग के निर्माण का संदेश देते हैं- ''फिर से धरती को फुल्ल ओक बनाओ। फसलों की पकी गंध बनकर तुम छाओ। निर्माण बीज युग के पतझर से लेकर। तुम नवयुग का रंगोत्सव नया रचाओ।''

कवि माथुर जी को बिछोह की अवस्था में भी पूर्ण मिलन की मादक स्मृतियाँ उन्हें वर्तमान में कर्मशील बनाती हैं। यही कारण है कि माथुर जी के काव्य में आस्था और विश्वास है। माथुर जी संघर्ष के कवि हैं। जीवन के विभिन्न परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए स्वर्णिम भविष्य की आस्था इनकी रचनाओं में समाया हुआ है। सुख स्वप्नों के स्थान पर जन-जागरण की अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं में हुई है। कवि को पूर्ण विश्वास है कि आज उसके गीत सत्य के संदेश-वाहक तथा जागरण का संदेश देने में समर्थ हैं- ''आज मेरे स्वर बनेंगे सत्य के संदेशवाहक/आज मेरे गीत होंगे जागरण की रागिनी के ?''

उन्होंने आर्थिक विषमता से उत्पन्न असमानताओं के प्रति अपनी कविताओं को वाणी प्रदान की है। वह इन असमानताओं को दूर करने के लिए रक्त-क्रांति करना नहीं चाहता, अपितु वह प्रबुद्ध पाठक को इस ओर सचेत करना चाहता है। धनिक वर्ग ने शोषण से समाज की जड़ों को खोखला बना दिया है, कवि ऐसे कृत्यों का खुलकर अभिव्यक्ति की है। भले ही जीवन अभावग्रस्त हो, लेकिन कवि की आस्था कभी विचलित नहीं हो पाती है। वे यह भी स्वीकार करते हैं कि मानव-जीवन सतत संघर्षशील जीवन है। विजय कुमारी के विचार उल्लेखनीय हैं- ''अभावग्रस्त जीवन का चित्रण करते हुए भी कवि की आस्था कहीं विचलित नहीं होती, क्योंकि वे मानव-जीवन को संघर्ष का जीवन मानते हैं। उनका विश्वास है कि कठोर परिश्रम द्वारा मनुष्य विषम परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना सकता है। देश का नवनिर्माण सभी वर्गों की लगन तथा कठोर परिश्रम द्वारा ही संभव हो सकता है।''[13]

कवि माथुर की कविताओं में निरंतर परिश्रम, संघर्ष, आस्था और विश्वास की एकनिष्ठता, जिजीविषा और आशावादी दृष्टि दिखाई देती है। उनकी कविताओं के विषय में वैविध्य दिखाई देता है। वे समाज में समता लाना चाहते हैं, इसके लिए कवि निर्माण-पक्ष को अधिक महत्व देते हैं। समाज का विकास तभी संभव है, जब मानव कठोर परिश्रम एवं दृढ़ संकल्प द्वारा धरती को फिर से हरा-भरा करेगा। वे रक्त-क्रांति तथा नारेबाजी पर विश्वास नहीं करते, वे विश्वास करते हैं मानव के कठोर परिश्रम पर। उनकी कविताओं में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों में आशा और विश्वास की सफलतम अभिव्यक्ति हुई है। कवि को अपनी प्रेयसी के प्रेम पर भरोसा है। वे यह मानते हैं कि विपरीत परिस्थिति में यही प्रेम शक्ति का संचार करने वाली होती है, जिससे हमें शक्ति प्राप्त होती है और इसी शक्ति से हमें नवीन कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। वैज्ञानिक क्षेत्र में किया गया कार्य माथुर जी का सर्वथा मौलिक नवीन कार्य है, इस पर उन्हें अच्छी सफलता भी मिली है। वैज्ञानिक अविष्कारों पर भी कवि को पूर्ण आस्था और विश्वास है। वे यह स्वीकारते हैं कि 'पृथ्वीकल्प' और 'कल्पान्तर' वैज्ञानिक उपलब्धियों का काव्य है, जिसमें भय नहीं अपितु आशा और उल्लास अधिकाधिक दिखाई देता है।

संदर्भ-सूची:

1. पाण्डेय, गंगा प्रसाद. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 1966; 25.
2. वही.
3. वर्मा, मुकेश. समावर्तन. उज्जैन: माधवी दशहरा मैदान, मई 2019.
4. गर्ग, शेरजंग. हमारे लोकप्रिय गीतकार गिरिजा कुमार माथुर. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2002; 5.
5. वही; 8.
6. नगेन्द्र. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि-माथुर. नई दिल्ली: राजपाल एंड संस, 1961; (भूमिका) 3.
7. माहेश्वरी, मधु. गिरिजा कुमार माथुर के काव्य बनावट और बुनावट. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 1988; 68-69.
8. वही.
9. वही.
10. मिश्र, दुर्गाशंकर. गिरिजा कुमार माथुर और उनका काव्य. लखनऊ: हिंदी साहित्य भंडार, 1974; 50.
11. अनुरागी, अजय. नयी कविता गिरिजा कुमार माथुर. जयपुर: पंचशील प्रकाशन, 2007; 67.
12. मानव, विश्वम्भर. नयी कविता. इलाहाबाद: साहित्य भवन (प्राइवेट) लिमिटेड, 1957; 216.
13. विजय कुमारी. गिरिजा कुमार माथुर नयी कविता के परिप्रेक्ष्य में. नई दिल्ली: अभिनव प्रकाशन, 1976; 100.